भोर

प्रभात

रात ने पुकारा, "भोर ! ओ भोर ! देखो, तारे डूब गए हैं। चाँद भी डूब गया है। मैं जा रही हूँ। अब तुम आओ और अपना काम देखो।"

भोर अँधेरे के उस पार थी। रात की आवाज़ सुनकर वहीं से बोली, "अच्छा जाओ। कहकर जाने के लिए शुक्रिया।" भोर अँगड़ाई लेते हुए खड़ी हुई। चारों ओर दूर-दूर तक लम्बी निगाह डाली। सारा संसार सोया हुआ है। पहाड़ खर्राटे ले रहा है। सोए जंगल की साँसें सुनाई दे रही हैं। नदी सो रही है। उसके पानी पर पड़ी अँधेरे की चादर कभी-कभार हिलती है, जब नदी लहरों के हाथ-पाँव इधर-उधर करती है। नदी के सपनों में झरने मिलने आ रहे हैं। पर, सच तो यह है कि झरने नींद में चल रहे हैं। झरने सोते तो हैं पर उन्हें नींद में चलने की आदत है।

तभी हवा के एक ठण्डे-मीठे झकोरे ने आकर भोर को छुआ। पवन झकोरे से भोर के कुछ केश चेहरे पर आ गए। केशों को चेहरे पर से हटाते हुए भोर ने कहा, "तो तुम आ गईं।"

"भोर तो आई ही है। मैं तो छा भी गई।" भोर और हवा के बीच में टपकते हुए ओस ने कहा।

भोर और हवा ने लम्बी निगाह पसारकर देखा – नीले अँधेरे में पृथ्वी के लगभग सभी हिस्सों पर ओस गिरी हुई है और गिर रही है।

"तो शुरू करें?" कहते हुए भोर और उसके साथी संसार को जगाने के काम में लग गए।

ओस को खेतों में लहलहाती हरी-भरी फसलों को जगाने के काम में मज़ा आता था। वह पीले फूलों से भरी हरी सरसों के खेतों में जाकर झरी। इन खेतों में डूबे हुए चाँद की कुछ-कुछ रोशनी बाकी थी। वह फूलों और चौड़े पत्तों को चुन-चुनकर जगा रही थी। फूल के करीब जाकर कान में पानी की आवाज़ में फुसफुसाती और फिसलती हुई टप से हरे पत्ते पर जा गिरती। उधर चट से फूल की आँख खुलती इधर सरसों का पत्ता ठण्ड से बुदबुदाता, "आज तो कड़ाके की ठण्ड है।" तभी हवा ने आकर सारे खेतों को हल्के-से झकोरे की थपकी लगाई। खेतों को लगा जैसे किसी ने बहुत ही नर्म और बहुत ही कम गर्म चादर उन पर से खींच ली है। सारे खेत एक साथ बुदबुदाए, "कड़ाके की ठण्ड है। आज तो मारे गए। हवा और ओस का रुख अच्छा नहीं है। भाइयो, देखो ज़रा! पाला तो नहीं पड़ने वाला है?"

खेतों की ज़मीन ने हरी-भरी फसल से कहा, "कुछ ही देर की बात है। सब कुछ ठीक हो जाएगा। फिलहाल सब एक दूसरे से सटकर मज़बूत बने रहो। अपने साथियों पर नज़र रखो। एक भी पौधा लड़खड़ाकर गिरने न पाए। सूरज के उगते ही सब ठीक हो जाएगा। कुछ ही देर मज़बूत बने रहो,

भाइयो! सूरज की किरणें आ ही रही हैं। एक-एक पौधे का साथ देने सौ-सौ किरणें खड़ी हो जाएँगी। मगर अभी हवा और ओस का मुकाबला करना ही होगा।"

हवा और ओस ने ठण्ड के कहर से उपजा यह हाहाकार सुना तो वे दोनों बड़ी शर्मिंदा हुईं। "लगता है कुछ ज़्यादती ज़रूर हुई है।" ओस ने हवा से कहा। "हाँ, यहाँ ओस कुछ ज़्यादा हो गई है। वरना आमतौर पर तो खेत ओस से बड़े खुश रहते हैं। चलो, अब हम अलग-अलग दिशाओं में मुड़ जाएँ।" हवा ने कहा।

"पृथ्वी पर रोज़ एक अच्छी भोर ले आना कोई कम मुश्किल काम नहीं।" अफसोस के साथ बुदबुदाती हवा और ओस विपरीत दिशाओं में हो गईं।

अब ओस सुदूर गेहुँओं के खेतों पर झरी। फिर सारे मैदानों और घासों और फूलों भरी खरपतवार को उसने चीनी के कणों से भी बारीक पानी की झिल्लियों से कुछ-कुछ भिगोया। बड़े पेड़ों पर भी ओस गिरी। वहाँ उसे मोटी बूँद बनकर गिरना था। बड़े पेड़ों के पत्तों पर जब मोटी बूँदें गिरतीं तो वे गाय के कान की तरह हिलते।

हवा को सारे जंगल को झकझोरकर जगाने में मज़ा आता था। उसके ऐसा करने से विशाल जंगल से वैसा ही विशाल संगीत गूँजता था। पृथ्वी पर जंगल से दूर के बाशिंदे बातें करते थे कि कहीं जंगल हिल रहा है। जंगल के भीतर का दृश्य भी कम अद्‌भुत नहीं होता। जंगली पेड़ों की भारी-भरकम शाखाओं और उनकी टहनियों के झुरमुटों में पक्षियों के अनगिनत घोंसले एक साथ हिलते। सारी चिड़ियाँ हिल जातीं। चहक-चहक जातीं। चारों दिशाओं में कलरव फैल जाता। सारे उड़ने वाले डैने चौड़ेकर आकाश को उड़ानों से भरते हुए नज़र आते।

झाड़ियों और बिलों में छिपे रेंगने वाले इस शोर और आहटों से परेशान होकर इधर-उधर सरकते, बल खाते हुए जाने लगते। सुस्त चौपाए भी उठ-उठकर पानी के डबरों की ओर जाने लगते। शेर, भालू, गीदड़, साही, चूहे, बिलाव – सब के सब। इस तरह सारा जंगल जाग जाता। पृथ्वी पर हलचल खासी बढ़ जाती।

भोर के लिए चुनौती का काम था दो पैर वालों को जगाना। वे धरती पर घर बनाकर रहते थे। घरों के भीतर से कुण्डी बन्द करके खाटों पर अपने-आपको ढँककर सोते थे। बहुत मुश्किल से ही कभी मुँह बाहर निकालते थे। इन्हें जगाने के लिए भोर ने हवा और ओस को पुकारा, "ओ री हवा! सुनती हो ओ ओस! इधर चली आओ। धरती पर इतनी हलचल पैदा हो चुकी है कि जो अभी भी सो रहे हैं वे यह हलचल सुनकर जग जाएँगे। मगर इन दो पैर वालों को कोई हलचल नहीं जगा सकती। इनसे तो रात को भी बड़ी भारी शिकायत है। अजीब तरह के जीव हैं ये। रात को इन्हें सुलाना मुश्किल, भोर में इन्हें जगाना

चित्रः दिलीप चिंचालकर

अजीब तरह के जीव हैं ये। रात को इन्हें सुलाना मुश्किल, भोर में इन्हें जगाना मुश्किल।"

"तुम उनके दिमागों में ऐसे घुस जाओ कि उन्हें लगे सुबह हो गई। फिर भी वे पड़े ही रहेंगे इसके लिए हम आ रही हैं।" ओस और हवा ने दूर से पुकार कर भोर से कहा। भोर तक उनकी आवाज़ पहुँचे इससे पहले वह खुद ही वहाँ पहुँच गई। वे ऐन उन जगहों पर हड़कम्प मचाने लगीं जहाँ दो पैर वाले धरती पर जगह-जगह गाँव, शहर और नगर बसा-बसाकर सो रहे थे। तीनों ने खूब हड़कम्प मचाया फिर भी दो पैर वाले नहीं जगे। इस पर अनुभवी भोर ने कहा, "लालच ही इन्हें जगा सकता है। इनके पालतू मुर्गे, मुर्गियों, गाय बैल, भैंस-बछड़ों को जगा दो। इनकी मीठी नींदों में ऐसे सपने भेजो जिनसे इन्हें अहसास हो आए कि इनका कितना सारा काम अधूरा पड़ा है। काम पूरा नहीं हुआ तो इनकी ज़िन्दगी का क्या होने वाला है – यह सब इन्हें सपनों में अच्छी तरह समझा दो।"

भोर, हवा और ओस ने देखा कि दुनिया के सभी घरों में दो पैर वालियाँ जाग-जागकर रोशनी कर रही हैं। दो पैर वाले सपनों में चौंक-चौंककर जग रहे हैं। मगर उनमें से कुछ वापस ओढ़कर सो रहे हैं। उनका कुछ नहीं हो सकता।

यह भोर का वह समय था जब नीली रोशनाई सिमट रही थी। कहीं दिन हो चुका है। वहाँ फैली रोशनी की आहट यहाँ सुनाई दिखाई दे रही थी। अब भोर का आखिरी काम रह गया था – पहाड़ को जगाना।

भोर को कभी समझ में नहीं आया कि पहाड़ को जगाने का ज़िम्मा किसे दे। वह उसकी उम्र का लिहाज़ करके सोचती, "सोने दो, वैसे भी इसे कहीं जाना तो है नहीं। सदियों से इसी तरह पड़ा है। इंसानों ने बारूदी धमाके कर-कर के उनकी नींद उड़ाने में कोई कमी नहीं छोड़ी तब भी यह अपनी जगह से एक इंच नहीं खिसका। सदियों में तो सैंकड़ों मील लम्बी नदियाँ तक न जाने कितने रास्ते बदल लेती हैं – मगर ये जनाब तो... ।" भोर कभी भी पहाड़ से "अलभोर की पहली नमस्ते" से ज़्यादा कुछ नहीं कह पाई। और भोर को कभी नमस्ते का जवाब मिला हो ऐसा किसी को याद नहीं पड़ता।

अब बताओ। पहाड़ जगे नहीं तो काम कैसे चले? कैसे उसकी चट्टानों में पानी के चश्मे हिरनों की तरह डोलते फिरें। पहाड़ों पर इतने पेड़ और घास कैसे उगें! नहीं उगें तो दुनिया की सारी भेड़ों-बकरियों का तो बेड़ा ही गर्क हो जाए। क्योंकि उनकी तो पहली और आखिरी पसन्द ही पहाड़ हैं। अगर पहाड़ चौपायों की तरह घूमते होते तो दुनिया की सारी भेड़-बकरियाँ पहाड़ों से शादी करतीं। इसलिए भोर के न कहने पर भी सूरज पहाड़ को जगाने की अपनी ज़िम्मेदारी समझता है। यही वजह है कि वह हर सुबह पहाड़ के पीछे गुलाबी आँखें चमकाता नज़र आता है। पहाड़ को जगाने और धरती पर गुलाबी धूप बिखरने के बाद तो वह पूरी तरह आ ही जाता है। फिर भोर धरती के तालों, सागरों, महासागरों में डुबकी लगा ही जाती है। नहाकर जब वह बाहर निकलती है और धरती पर चलती है तो किरणों के गुलाबी तलुवों से चट-चट धूप के कल्ले फूटते हैं।